नीतीश मिश्रा
पूर्व मंत्री
बिहार सरकार

सदस्य
बिहार विधान सभा

Ref: 265/2021
Dt-6-8-2021

आदरणीय मंत्री महोदय,

विषयः—**बिहार में अवस्थित दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया एवं महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी में योग अभ्यास शिक्षा पाठ्क्रम को संकाय के रूप में अधिसूचित कर अध्यापन कार्य प्रारंम्भ कराने के संबंध में।**

योग अभ्यास का एक प्राचीन रूप है जो भारतीय समाज में हजारों वर्ष पूर्व विकसित हुआ था और उसके बाद से सत्त इसका अभ्यास किया जा रहा है। अब संपूर्ण संसार ने इसकी उपयोगिता को माना है। इसमें किसी भी व्यक्ति को सेहतमंद बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के व्यायाम शामिल है। योग मानसिक आध्यात्मिक और शारीरिक पथ के माध्यम से जीवन जीने की कला सिखाता है।

11 दिसम्बर 2014 को माननीय प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा में 21 जून को अंतराष्ट्रीय योग दिवस मनाने के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया। यू॰एन॰ओ॰ ने योग की महत्ता को स्वीकार करते हुये माना कि "योग मानव स्वास्थ्य एवं कल्याण की दिशा में एक संपूर्ण नजरिया है"। कोविड–19 महामारी से लड़ने में भारत की करीब 1.35 अरब आबादी को योग क्रिया का महत्व साबित हुआ है और आबादी के हिसाब से भारत पर दुष्प्रभाव भी कम पड़ा है। 21 जून 2015 में पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया।

योग शारीरिक शक्ति को बढ़ाते हुये चित की वृतियों पर नियंत्रण भी करता है। योग अभ्यास विद्या को महाविद्यालय/विश्वविद्यालय में आवश्यक रूप में लागू किये जाने की आवश्यकता है।

बिहार में अवस्थित दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया एवं महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी में योग अभ्यास शिक्षा पाठ्यक्रम को संकाय के रूप में अधिसूचित करने एवं अध्यापन कार्य प्रारंभ कराने से भारत ही नहीं बल्कि विश्व के

112, कौटिल्य नगर, पटना 800014
Tel. : 0612 222 6263 Fax : 0612 222 5218 E-mail : nitishmishraoffice@gmail.com
/NitishMishraOfficial @mishranitish www.jhanjharpur.co.in

छात्र/छात्राएँ अध्ययन कर सकेंगे एवं योग विद्या के प्रति भारत की पहचान बढ़ेगी। योग शिक्षा को एक मानक के रूप में स्थापित करने के लिए अध्यापन कार्य प्रारंभ कराना आवश्यक है।

उपर्युक्त विश्वविद्यालय में संकाय के रूप में प्रारंभ करने की आवश्यकता है क्योंकि योग शिक्षा में मानद उपाधि प्राप्त कर विद्यालयों/महाविद्यालयों में योग शिक्षक के रूप में विद्यालय अथवा अन्य सामाजिक संस्थाओं में काम कर अपनी आजीविका चला सकते हैं। योग शिक्षा को एक आन्दोलन का रूप देने से नया भारत का सपना साकार हो सकेगा। स्वस्थ शरीर के साथ–साथ स्वस्थ मन ही आधुनिक भारत को अग्रिम पंक्ति में ला सकता है। व्यक्ति के सर्वांगीन विकास में योग को जीवन का प्रथम पाठशाला का दर्जा देने की आवश्यकता है।

अतः अनुरोध है कि उक्त दोनों केन्द्रीय विश्वविद्यालय में योग अभ्यास शिक्षा पाठ्यक्रम को संकाय के रूप में अधिसूचित करने एवं अध्यापन कार्य प्रारंभ कराने हेतु विचार करना चाहेंगे।

सादर,

भवदीय

Nitish Mishra

(नीतीश मिश्रा) 6.8.21

सेवा में,

श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी,
माननीय शिक्षा मंत्री,
भारत सरकार,
नई दिल्ली।